आचार्य यार्लगड्डा लक्ष्मीप्रसाद

आंध्र विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष एवं आचार्य यार्लगड्डा लक्ष्मी प्रसाद विलक्षण प्रतिभा के धनी मनीषी साहित्यकार हैं। हिन्दी और तेलुगु भाषाओं के मध्य शोधकार्य, आलेख, आलोचना तथा अनुवाद के द्वारा आचार्य लक्ष्मी प्रसाद ने समृद्ध संवाद गतिशील किया है। मानवतावादी दृष्टि तथा समन्वयवादी सृजनशील प्रवृत्ति ने उनके व्यक्तित्व को उत्तर और दक्षिण की समेकित संस्कृति का प्रतीक बना दिया था।

समकालीन साहित्य जगत् में आचार्य वाई.लक्ष्मी प्रसाद की हिन्दी एवं तेलुगु में प्रकाशित पुस्तकों ने एक महत्त्वपूर्ण स्थान अर्जित किया है। आपकी हिन्दी में प्रकाशित पुस्तकें हैं - 'तेलुगु के आधुनिक कवि बैरागी', 'हिन्दी कविता को आंध्रों की देन', 'आत्महत्या', 'कविराजु त्रिपुरनेनि के दो पौराणिक नाटक' आदि। तेलुगु में उनकी उल्लेखनीय पुस्तकें हैं - 'सप्तस्वरालु', 'जाति नेता जयप्रकाश', 'वर्त्तमान राजकीय दुःस्थिति', 'केरटालु', 'तमस', 'इरवै ओकटो शताब्दम् लोकि', 'वेदना भरितम्', 'ययाति', 'हिन्दी साहित्य चरित्रा', 'डॉ.रामेश्वर लोहिया', 'पुच्चलपल्लि सुन्दरय्या', 'डॉ.हरिवंशराय बच्चन - आत्मकथा' आदि। पत्र-पत्रिकाओं में इनके शताधिक लेख प्रकाशित हो चुके हैं। आचार्य वाई.लक्ष्मी प्रसाद संयुक्त राज्य अमेरिका, कॅनाडा, फ्राँस, बेल्जियम, मलेशिया, सिंगापुर, यू.के, उक्रेन, ईजिप्ट, थाईलैण्ड तथा यू.ए.ई. की यात्राएँ कर चुके हैं।

दृष्टि और लक्ष्य की व्यापकता के कारण आचार्य वाई. लक्ष्मी प्रसाद अनेक संगठनों-संस्थाओं व सभाओं से संबद्ध रहे हैं। 1996-2002 तक वे राज्यसभा के सदस्य रहे। इसके अतिरिक्त केन्द्रीय हिन्दी समिति (सदस्य), संसदीय राजभाषा समिति (उपाध्यक्ष), प्रेस काउन्सिल ऑफ इण्डिया (सदस्य), कई मंत्रालयों की हिन्दी सलाहकार समितियाँ (सदस्य) आंध्र प्रदेश हिन्दी अकादमी आदि से आपके जुड़ाव ने तत्संबंधी सक्रियताओं में गुणात्मक अभिवृद्धि की। आचार्य लक्ष्मी प्रसाद पिछले पाँच वर्षों से 'जनशिक्षण संस्थान' (मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली) की विशाखपट्टणम शाखा के अध्यक्ष के रूप में कई शैक्षणिक, सामाजिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का सफलतापूर्वक संचालन कर रहे हैं। 'लोकनायक फाऊण्डेशन' की स्थापना कर वे कई सेवा-कार्यक्रमों तथा साहित्यिक गतिविधियों को प्रोत्साहन देने लगे हैं। 'संसदीय राजभाषा समिति' के उपाध्यक्ष के रूप में आचार्य लक्ष्मी प्रसाद की उपलब्धियाँ राष्ट्रीय महत्त्व की हैं।

आचार्य वाई.लक्ष्मी प्रसाद को उनके समर्पण और सौमनस्यपूर्ण व्यक्तित्व-कृतित्व के लिए अनेकशः सम्मानित किया गया है। 2003 में आपको 'पद्मश्री' से अलंकृत किया गया। शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार का राष्ट्रीय पुरस्कार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय का राष्ट्रीय पुरस्कार, यू.जी.सी द्वारा कैरियर अवार्ड, तेलुगु विश्वविद्यालय द्वारा श्रेष्ठ अनुवाद पुरस्कार, साहित्य अकादमी का अनुवाद पुरस्कार, ताना पुरस्कार, उत्तर प्रदेश सरकार का 'सौहार्द सम्मान', रूस द्वारा 'पुश्किन सम्मान' आदि कई सम्मानोपाधियाँ आपसे संयुक्त हैं। आंध्र प्रदेश सरकार ने आचार्य वाई.लक्ष्मी प्रसाद जी को राज्य मंत्री के स्तर पर 'आंध्र प्रदेश हिन्दी अकादमी' के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया है।